

१९६०-१९७१।

१

॥श्रीरामविजयग्रथन्योदयध्यायप्रारंभा॥



"Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Bhule and the Yashwantrao Chavhan Pratinidhi, Mumbai."

२
रात्रि
॥१९॥

॥३३॥

॥श्रीगणेशायनमः॥ संस्कृतापासावकेवल्ल। जालीनाद्यतभाषारसाळ॥ कीं स्वातीजवा
यासावसुक्ताफल॥ अनितेजावनिफजे॥ १॥ चद्राचेआगिनीफजेचंदन॥ कीं हीनकरापासावजे
वीं कीर्ण॥ कीं जबुकाफांकापासावजेवीं सोरें॥ दिव्यबावनकसनीफजे॥ २॥ कीं दह्यापासु
ननवनीत॥ कीं अन्यासापासावमनीजङ्गत॥ कीं युक्षदंडापासावनीफजत॥ रसभरीतरक्त
रा॥ ३॥ कीं पुष्प्यापासावयरीमल॥ कीं रंगेपासनकर्पुदाशीतक॥ कीं मृगांकापासावपरीमल
मृगमदजेसानीफजे॥ ४॥ कथालक्षणसरातानाय॥ साहीत्यतरंगभयरमित॥ प्रेम
बलहरीयाभङ्गत॥ ऐक्ययेतपरस्ये त्रामृताहुनगोडजन्म॥ परीहचनयेशारे
वीणे॥ दक्षांतेवीणग्रंथपुर्ण॥ रसनचटेसवेथां॥ ५॥ रलखाणिमेदपाठारीं॥ त्तेसेदशो
तग्रंथामास्तारि॥ कमलाचांचोनसरोवरीं॥ श्रोभानयेसवेथां॥ ६॥ अक्लंकारेंशोभ्रेनीतं
णी॥ कीं गगनमंडितउडगाणि॥ किं मानससिक्षावाचुनि॥ श्रोभानदिसेसर्वथा॥ ७॥ किं
मननावावीणश्रवण॥ कीं सद्रावाखिणाकिर्तन॥ किं क्षेत्रजे सेवीजाविण॥ दक्षांतावां

॥१९॥

॥३३॥

चुनग्रंथत्तेसा ॥९॥ कीं सभाजैश्रीपंडीतावीण ॥ सुस्वरेवीणगायन ॥ कीं शुचीवीण
 तपश्चरण ॥ दक्षांतेवीणग्रंथत्तेसा ॥१०॥ कीं वीरक्तीविणज्ञान ॥ कीं श्रेमेवीणव्यर्थंभ
 जन ॥ कीं दानेवीणभाग्यपुर्ण ॥ दक्षांतेवीणग्रंथत्तेसा ॥११॥ अरण्यकांडअरण्याल
 दक्षांतदक्षावीरजन्तु ॥ तेथींचीत्तानंदफलेपंडीत ॥ सदांश्रोवोतस्वानंदें ॥१२॥ आ
 तांअरण्यकांउवसंतवन ॥ तेथेंवाग्देवीचीदक्षात्तीयुर्ण ॥ कीडाकरीलुल्हासें
 करन ॥ संतज्जनप्ररीसोन ॥१३॥ असंचीत्तानंदहनरघुनाथ ॥ श्रीत्तास्मीन्नास
 मवेत्त ॥ नीजभक्तीश्रीउधरीत ॥ जमना जातसे ॥१४॥ दक्षणपंथेंजनकजामा
 त ॥ सकलशुषिकेआश्रमपाहात ॥ त्रयाद्वापरुषेपरीयंत ॥ रघुथलमीहीश्रीं ॥१५
 कोटेवर्षकोटेजयन ॥ कोटेमासकोटेपक्षपुर्ण ॥ कोटेयेकरात्रदीन ॥ कोटेपचरात्री
 छमियेल्या ॥१६॥ मगञ्चीयाभाश्रमप्राप्ति ॥ येत्ताजाहालाजनकजापति ॥ तो
 देखीलिदतात्रयसुती ॥ अवीनाशस्त्रितीजयाचि ॥१७॥ सीन्हांद्रीवरिश्रीराम ॥ अ

Digitized by srujanika@gmail.com

१०४
११२॥

३

जञ्जीतघनः राम ॥ दत्तात्रय होयुर्णब्रह्म ॥ देत्तक्षेपतयांते ॥ १७ ॥ क्षीरसागरीं
चीयालहरीया ॥ उचब्बोनयेकवटलीया ॥ किंजान्हनीआणीमीनतनया ॥ येकेंगा
द्रीमिवति ॥ १८ ॥ किनानावर्णगाई ॥ परीदुधासंवर्षनाहीं ॥ तैसाजनकाचाजा
वई ॥ आणीआत्रितनयसमरसले ॥ १९ ॥ अवत्तारहीउद्देउयोति ॥ सवेचिमागु
तीलयाजाती ॥ तौशीनकेदत्तायमुर्ती ॥ नाशकाष्टांतिं असेना ॥ २० ॥ युर्णब्रह्ममुसा
वले ॥ हेदत्तात्रयसपवोनलें ॥ जान्चे तिलिघनें प्रान्तं रले ॥ जीवजपारन्निभुवनि ॥ २१ ॥
सकळसिद्धक्रष्णीर्जिर ॥ वीधीवाच्यतीर्णीवर ॥ दत्तात्रयदर्शनीसादर ॥
त्रीकाळयेतिनिजभावे ॥ २२ ॥ अद्याप्ति क्लाद्रिपर्वति ॥ देवाच्यभारउत्तरती ॥ स
र्वज्ञह्यांडिचीदेवतेंधावति ॥ अवधुतमुर्तीपिहावया ॥ २३ ॥ चेत्तांदत्तात्रयदर्श
देवासंसामर्थ्यचेपुर्ण ॥ प्रगते ईतरांसहोतिप्रसन्न ॥ वरदानद्यावयाते ॥ २४ ॥
जासप्रयागीप्रान्तभान ॥ पांचाळेश्वरीं जनुषान ॥ करवीरसुरातेयेउन ॥ भीक्षा
• ११२॥

॥३४॥

दलमाध्यानि ॥३५॥ अस्ताजातांवासरमणी ॥ सींक्हाद्रीसजातपरतोनि ॥ तेऽदेवांचेषा
 रकरजोउनि ॥ वाटपाहानिअगोधर ॥३६॥ द्रीष्ठिदेखतांदीगांवर ॥ येकचहोयजयज
 यकार ॥ असंख्यवाद्यांचागजर ॥ अद्यापिभक्तैकती ॥३७॥ दतात्रयभक्तदेखतां
 द्रीष्ठि ॥ तकब्रदेवतेजेजेश्वरि ॥ तेजेपारियालिमीटि ॥ उमेटाकतिकरुजोउनि ॥३८॥
 करिलांदतात्रयस्मरइ ॥ उत्तेप्रेरेपवतिउगनगायाउपासकांसवीञ्च ॥ कवणकरंञ्च
 केल ॥३९॥ अस्योदैसास्वामिअङ्गत ॥ उजेअन्नचामहत्युल्यपर्वत ॥ तयासवंदुनरघुना
 था ॥ अनीदशनघेत्वैं ॥४०॥ तवंतेअनरयासती ॥ श्रिलारामतीशिंवंदीती ॥ श्रिले
 श्रिआलिंगुनप्रीति ॥ वरदेतीजाहालिप ॥४१॥ आयुलैनिटविंचेकुंकुमकाढीलैं ॥
 तेश्रिलेचेष्टाचिंडावौले ॥ अमवरस्तनेसवीलैं ॥ जैनमवेनवीटेकल्पाती ॥४२॥ शागवां
 धात्वासुमनहार ॥ जोकधोप्रसुखसाचार ॥ जैसानियनुतनाद्विकर ॥ तेजअ
 णुमान्नटकेना ॥४३॥ श्रिलेचेसुवासरारीर ॥ अनुसयाकरीनीरंतर ॥ जासुवासें

थु

(38)

राठ्य
१३॥

५

बर ॥ परीपुर्णहोयपै ॥ ३५ ॥ भेदतां राक्षसदुर्धर ॥ श्रीले सभयवाटे अणु मान्न ॥ देसा
दीधत्तानी भर्यवर ॥ अनुसयेनेते समई ॥ ३६ ॥ सर्वेचरेणुके चेदर्हन ॥ चेतरवीकुच
भुषण ॥ जीवे वरहेभार्गवेपुर्ण ॥ नीक्षन केल्लीधरनी ॥ ३७ ॥ तेमुक्षपीटवाशिषीशास्ति
तिसर्वं दिउज्यो ध्यापति ॥ श्रीरामाचीमुक्षप्रद्वानी ॥ आदिमायानिर्धाइ ॥ ३८ ॥ तेप्रथ
मअवतारिं चीजननी ॥ तेचीकंशल्याजात्तेदुम्भरेनी ॥ श्रीरामस्तवीम्भणोनि ॥ ज
यजयमुक्षपीटनायके ॥ ३९ ॥ जयजयआदि कुमारिके ॥ जयजयमुक्षपीटनायके ॥
सकवकल्याणसोभाग्यदायके ॥ जगद्वीकेमुक्षप्रद्वानी ॥ ४० ॥ जयजयभार्गव
श्रीयभवानि ॥ भवमोचकेमत्तवर ॥ सुभद्राकारकेहीमनगनं हीनि ॥ श्रीपु
रसुदरिआदिमाये ॥ ४१ ॥ जयजयआनेदका सारमराविके ॥ जयजयचातुर्य
चंपककठीके ॥ जयजयमुक्षनीमुक्षभांतके ॥ सर्वव्यायकेमृतानी ॥ ४२ ॥ जयज
यश्रीवसानसकनकलतिके ॥ पद्मनयनेदुरीतवनपावके ॥ जयश्रीवीधताप
॥ ४३ ॥

॥४३॥

चके ॥ नीज जनयाव केअपर्णे ॥ ४३ ॥ तव सुख क मवशोभा देरवो नि ॥ ईदु बीं बगलें बीरो नि ॥
ब्रह्मा दिक्ष बाढ़े ति कि ॥ स्वानं दसद नीज वीरी ॥ ४४ ॥ जीवारी वदो नहि वाव कें ॥ अंवे नुनी
भित्री को नुकें ॥ जीव लुम्से खदप नोव रवो लाणो निप डिल्डा आवत्ती ॥ ४५ ॥ श्रीव लुम्से ख
दपी साव चीत ॥ लाणो निलो नीत्य मुहु ॥ ब्रह्मा नं दपद हात्य येत ॥ श्व लुम्से द्वये नेज नि
ये ॥ ४६ ॥ मेव्हु निपंच भुतां चामे वा मलु वांरा चेल्डा ब्रह्मा उरवे छ ॥ ईछापुरतांता काव
क्षणे निमुक्त करित्रि हे ॥ ४७ ॥ ऐसे स्तु उन चाप पाणी ॥ सीक्षा द्विवरि देन न त्रय क्रमो नि
अत्री ऋषी ची आशां घुड़नी ॥ दद्धुण पथ गा लिल्डे ॥ ४८ ॥ अत्री लिण श्री रघुपति ॥ ये व
निराक्षर सवसा ति ॥ जत नक रीं दीलाप सि गद्धुण ही परतीन किले ॥ ४९ ॥ अवश्य स
णो निज ब्लज नेत्र ॥ पुटेवा लिल्डा स्मरा दिमि त्र ॥ पाटिदीं भोगे द्रध्य वत्तार ॥ विर सो
मीत्रये त से ॥ ५० ॥ यामागे मंगल भग नि ॥ मंगल कारक वी श्वजन नी ॥ ईछे रस्छी रह
सगा मिनि ॥ मंगल जननी वही चाले ॥ ५१ ॥ दुरावतां भुमी कट्ट्या ॥ सौमी त्रहुणे राजी

राय
४

५

बनैया॥ ना॥ जानकी मागें रा हि लिजग न्मोहना॥ उभें राह वें क्षण भाइ॥ ५३॥ बचने डे
कतां जग न्नाय क॥ उभारा हि त्राक्षण येक॥ परम उदार सुहां स्व सुख॥ परतौ न पाहा
लक्षीते कैडे॥ ५४॥ तं वते स कुमार जनक बालि॥ हवु हवु आलिजवालि॥ जेवी सा
रा सार बोचार न क्हावे॥ आसु खाची पाविजे॥ ५५॥ असौ पाति वृत्ता मंडण॥ विलो
कि श्रीरामाचैव दन॥ जावहानि कोठी मइन॥ बोवाल्लु नठा कावे॥ ५६॥ परम सलज्य हो
उन॥ केलें कीं चीत हां स्य वदन॥ जेपें नीव तीराध्य वकर्ण॥ लेसे वचन बोल्लिलि॥ ५७॥
स्थणेजगदूधार बीकु छ भुषण॥ वीष कंठ हृदय चीमय ओचना॥ चरणीं चालता
स्थुनंदना॥ बहु श्रमयो वलोता॥ ५८॥ पर... स कुमार त्रृप्तु पण॥ चरणीं चालता जा
हालात्रीण॥ कैदृष्ट ध्याये सहणोन॥ गुणस्ताग रावै सौवै॥ ५९॥ रातो सक्षे स कुमार
योहुन पदे तुमस्त्रिं अदवार॥ अहणसंध्या राग होउनी मिश्र॥ चरणा तविं सुख वाड
ल्ला॥ ६०॥ जेजान्हवी चेंज मस्त्वान॥ तें मीनी जकें द्वी प्राडिन॥ वितको दकें धुवोन ॥ ६१॥

॥३॥

मगचुरीनहाणभरि॥६॥आजीचेपेणंकीतीदुर॥जाहेहेनक्क्वेसाचर॥ऐकतांप्राक्षी
चेउतर॥द्रवलारघुवीरखंतरीं॥७॥ह्येणहेसुंहरचंपककळि॥चरणीचालतांश्रमलि
बोलतांनेजकमर्णीं॥अश्रुआलेरघुपतीचा॥८॥मगआपुव्याकरेकरन॥कुरवाव्येत
श्रितेवदन॥मस्तकींहस्तटेउन॥श्रमसंपुणहरियेला॥९॥परमसुखावलिजन
कर्तंदीनी॥मगआपुचेमुक्केत्रोंकरन॥त्रीरामाच्चोपदेंस्त्रादुनी॥प्रक्षाकुन्नुरितसें॥
॥१०॥मगउटोनचालिलारघुविय॥पाटारिआघुणअवतार॥त्यामागेजनकजास
कुमार॥हंसगतिचमकतसे॥११॥तोंवेरभावसांउनी॥वनचरेंपक्तिभयेकहनी
कीरोधराक्षसतेचीक्षणी॥आखाधाव॥नजकस्मात्॥१२॥माहाभयानकवीशा
क्षरीर॥खंदीरागारत्तेसेनेत्र॥कपालिंच्चीलाशेंदुर॥बावरझोटीमोक्षीया॥१३॥
जैसाअग्निचावोधथोर॥तौरीजीकाथबथबीतबाहीर॥काजकाचापर्वतथोर
तैसंशारिरदिसतसे॥१४॥मगव्यंनरमुडांच्यामाळा॥हातिंशुव्युर्ध्वधरीला॥सीं

राय
११५॥

(६)

हगजवन्वरांचासेवा ॥ ठोंचल्यामाकाशुब्दावरी ॥ ७३ ॥ त्रातांचेत्रात्त्रासुद्दा ॥
रगडिदाटेखालेघालुन ॥ वारेसलताप्रहरेंकरुन ॥ वक्षपादित्तसमुकीं ॥ ७४ ॥ पु
ढेंजातसेरघुनाथ ॥ मागुनवीरोधआलाधावत ॥ जानकिउचलुनअकस्मात्
जाताजाहालातेवेळे ॥ ७५ ॥ जेसागरहींतरुकरनीघोनि ॥ धनकुंभजायाधचे
उनी ॥ कींअकस्मात्रव्याघ्रयेउनि ॥ नेतउचलोनिहरणीतें ॥ ७६ ॥ किंहोमशावेत
नीघोनश्वान ॥ जायचोरुनपानघेउवातेसावीरोधकुजेत ॥ जातवेगेकसेनीयां
॥ ७७ ॥ कहणाल्यरेंकरुनीदेखाम ॥ जानकिस्पेनिनकुवटीक्का ॥ धांवधांवअ
योध्याजायका ॥ जगदंद्याव्यापकापानवधु ॥ ७८ ॥ परतोनपाहेराजीवाक्ष ॥ तां
सघनलाग्वेवक्ष ॥ नयनिनदिसेमत्यक्ष ॥ कोणि ॥ कुडेगेलातो ॥ ७९ ॥ क्षणनला
गतांगेलावाण ॥ चपक्कञ्चतीचपक्केहुन ॥ ताल्काळवृक्षद्वृक्ष ॥ केलेवनीमुक्क ॥ ७१० ॥
धनुष्यक्कउनजनकजासालें ॥ पाचारिलेघीरोधालें ॥ जेसामृगेइमाहांगजालें

५

१०४।१३॥

लक्षुमणं हाक कोडीलि ॥७७॥ अरे राक्षसा धर्मीर ॥ माइशावाण घटोङ्ग वथोर ॥ तुझें
अयुव्य सागरीं चे निर ॥ प्रार्थी लजातांनी धर्मीर ॥७८॥ माहावान् घाचे विभाग देर ख
कै सानेतु नवांचे लजं बुक ॥ आदी यात्यात वासुषक ॥ तोडी लडके सानी जांगे ॥७९॥ का
घाचे हातीं चादं उभ भंग ॥ कै वीने उश कें सोडी गा ॥ वासुगि चावीष दंत सवेग ॥ दर्दुर के
वीं पा डिल्ड ॥८०॥ वीरो धसणे तुं मातवधी टा ॥ गाविसांग श्री अचाट ॥ परी लूसें करिं न पी
ठा ॥ मुद्दिया तां जातां ची ॥८१॥ ऐसें राक्षस को ल्लो न ॥ जानकी सरवाले दे उन ॥ धांवीं
न लावदन पसरो न ॥ राम सोमी नावरी तेक ॥८२॥ करीतां धाव यावायो चे रवं डण ॥ रामें
सोडी लडो न बाडा ॥ तहीं दोही भुजा उ उन ॥ गोत्सु घेउ न जीरा लपंथा ॥८३॥ सवेची सु
र्य मुरवशारे ॥ श्री रघुदी लडं कोंत्राल्याकु मर्दी ॥ वी प्रानी दे वजय जय कारे ॥ लुध संभार क
र्षी ॥८४॥ वीरो धपावल्लादि व्यशारीर ॥ रामास वीन वीजो उन कर ॥ मणं धर्व तुं व
र ॥ नाम भाइं रघु वीरा ॥८५॥ गायन कराव याव ही त्रे ॥ यक्ष पति ने वो लावी त्रे ॥ तो

६८

म्यामद्यपानकेलें ॥ अंतजालेश्वरीर ॥ ८६ ॥ कदिराउमटेपैस्चर ॥ मगम्याकुनणाभाकी
 आयैवशास्त्रा ॥ लणेतुंहोनीशान्तर ॥ माहोंघोरवनांतरीं ॥ ८७ ॥ मगम्याकुनणाभाकी
 तांथोर ॥ प्रसंनजाहालाकुबेर ॥ तुजवनिवधीलरघुवीर ॥ तेऽध्याहोयतुस्ता ॥ ८८ ॥
 ॥ ८९ ॥ राघवावत्पेदाहासहल्लाग्येष्वीचरेत्तुनीचर ॥ माझेजेयेद्वार्गीर ॥ चक्ष
 चक्षांथोरकांपतसे ॥ ९० ॥ असोमाइतुधार्जालायेथ ॥ लणोनवंदीलारघु
 नाथ ॥ वीमानीबेसोनीवरीत ॥ स्वरूपानाश्रीपावल्ला ॥ ९१ ॥ वीरोधरामेसारीतों
 वनी ॥ चहोंकडेपसरेकीतीध्वनी ॥ जैयेनेत्तुपउतांजीवनीमपसरोनिजायेक्षणा
 ध्वं ॥ ९२ ॥ सत्यानींदानदत्तानीमेक ॥ कर्ता नेंभरेष्वमंडव ॥ दुर्जनाश्रीगुत्यसकल
 सांगतांपसरेचहुकडें ॥ ९३ ॥ कीकुक्कवेत्तासकरीतांउपकार ॥ कीतीवारेसवी
 मृतर ॥ संतस्तमागमेजपार ॥ दिव्यशानप्रैप्रवदें ॥ ९४ ॥ असोज्यानकीप्रेमेयेउन ॥ व
 दीश्रीरामाचरण ॥ लणेत्तुमचापराक्रमज्ञाणीधान ॥ अज्ञीश्रीपाहीलें ॥ ९५ ॥ ८

"Original Raikvedic Sanskrit Manuscript, Dhule and the Vashniav Community Project, 2023, File Number: RAJ-1000, Folio Number: 4v"

१०३।

वीरोधुधरेनजातां ॥ तेणोप्रार्थिलिंरघुनाथा ॥ स्वामितवदर्गीनाचीआस्ता ॥ शर
मंगक्षषिपाहातसे ॥ ९५ ॥ हंसवीमानघेउनईद्र ॥ त्यासमुक्तआत्मासाचार ॥ परीतु
जपाहील्यावीणप्रुनीच्चर ॥ नजायेचीत्रलयदा ॥ ९६ ॥ केकांउगवेलरोहीणवर ॥ स्वणो
नईछीतीचकोर ॥ तेसादीष्टिपाहावयारामचंद्र ॥ इरभंगतोईछीतुसे ॥ ९७ ॥
ऐसेंविरोधेसांगोन ॥ ममतोगल्लाउचरोन ॥ त्यचेजाश्रमापाश्रीरघुनंदन ॥ जातजा
लातेकाकी ॥ ९८ ॥ मगपुटेपुटेरघुनंदन ॥ तेजेतजानकीचीदरल ॥ तीवेपाटीश्रीलक्ष्म
इर ॥ चहोकडेपाहातसे ॥ ९९ ॥ आणिकते तरखनिचर ॥ ह्यणोनीचापासल्लावील्लाश्र
शर ॥ बक्कीयासुमित्रेचाकुमर ॥ याडीरास्वायेतसे ॥ १०० ॥ तोवक्षष्ठायेसक्षणक्षण
दाईटाईबैसेप्रभनयना ॥ त्यासठाकुनस्त्रणेलक्ष्मणा ॥ कांहोराहनाआजीकोटे ॥ ११ ॥
तोवक्ष्मातकीसर्वसाक्षी ॥ जोचराचरचीतयेरीक्षी ॥ पश्चाक्षीचामार्गलक्ष्मी ॥ उभारोह
क्षणयेक ॥ १२ ॥ युटेशरभंगचेजाश्रमारघुवीर ॥ येताजाहाल्लादयासागर ॥ चहुकड़

१०४

रा० य
७

(८)

नधावल्लोक्षेश्वर ॥ जैसे पुरगंगेचे ॥ ३ ॥ सांडुन समाधी तपश्चरण ॥ लगबंग
धावल्लेब्राल्लण ॥ शारभंगनीचेवेगेकरुन ॥ रामदर्शनातेकाविं ॥ ४ ॥ शारभंगतो
माहातषि ॥ यरीगळीत्तुव्यभरलेंयात्रि ॥ दीव्यशीरधरनभेडीत्रि ॥ येताजाला
श्रीरामाच्या ॥ ५ ॥ यहीलेंद्रारीरसांक ॥ शरीटेवीतोब्राल्लण ॥ क्षणभरीदीव्य
लपधरन ॥ रामदर्शनोपातला ॥ ६ ॥ असोदेखानक्षविंचेभार ॥ सार्वांगनभीत
रामसोमित्र ॥ शारभंगासहीतवीप्र ॥ शवेद्वेआलींगिल्ले ॥ ७ ॥ शारभंगाचेआ
श्रमात ॥ राहातेजालेरघुनाथग ॥ ८ ॥ सोमित्रासमवेत ॥ रामपुजीलाशरभंग
लक्षुमणहवितेयुसत ॥ कंथेखवालक ॥ यकापत ॥ शारभंगउद्घुनदाखवीत ॥
सोमित्रातेत्तेधवां ॥ ९ ॥ लणेहकर्मशीरभोगिल्यावीदा ॥ नलुटेकदोहेबधन
राजरंक होकांसाधुसश्नान ॥ कर्मगहनुसोडीना ॥ १० ॥ चीकरीउपजल्लीउद्घुमण
लणेवरमागाजीरघुनंदना ॥ कृषिल्ययेउद्घोदकरमाना ॥ मजलेनमी क्लेसवंथा

७

० आ १३१६

श्रीनोदकेंश्वाननित्य ॥ तेण शरीर हें उच्छवत् ॥ ऐ को न अवनीजा कांत ॥ काय बोलत
अखिते ॥ १२ ॥ असो तु लारि उद कद्वे उन ॥ प्रातः काखि कहं गमन ॥ तोंस्त्र संपत्तां चंड
कीर्ण ॥ उदया च बिंग बेला ॥ १३ ॥ अखि चाला शाष्ट्रे उन लवीत ॥ युदें चालि ले र
घुनाथ ॥ अखि चना चावि सर पुठत ॥ श्री राम ये त गौतम पत्नी रो ॥ १४ ॥ तों गौतमी तक
रीतों स्त्रान ॥ ते व्हां आट बलें हषी बचन ॥ मगध नु व्यादी आग्नि बाण ॥ सो डिला क्षण
बागलां ॥ १५ ॥ ते थे कन्या ये क श्वान सा चार ॥ ह खि चेजालें दीव्य शरीर ॥ मगवि मानी
बै सउन वीप्र ॥ राक्रै नै ल्डा स द्य बोका ॥ १६ ॥ आरीप श्वात बोंवी ॥ चपछे औ सा बाण
आला ॥ अपि आश्रमा पुढें कुप के ला ॥ बाण ब्रवे शर्ले ला धाला ला ॥ कुप उचं बवल्डा
उछोद के ॥ १७ ॥ मगसु ली क्षण आश्रमा प्रती ॥ ये त जाला जनक जापती ॥ मागि
ताप स लहु मिवती ॥ श्री रामा चो समागमें ॥ १८ ॥ नाना प्रकारी चेता पवित्रि ॥ की ते क
दक्षाय वाशि ॥ ये कव द्य ज्यं तव चो दी ॥ श्राव्दन उच्चारे बोलतां ॥ १९ ॥ ये कदं त ही ग

बहुवा॥ क्लेवेचावयाकारवेऽखवा॥ नग्रमोनि॥ जटाधारीसकवा॥ दुधहारीकवा
 हारी॥ २॥ असोसुतीद्युष्मावेआश्रमापाश्रिं॥ जाताशरयुतीरनीवाश्री॥ मगप
 रमानंदहोलवीप्राश्रिं॥ रघुपतिश्रीभेटले॥ ३॥ तेथेंकमोनितीनदीन॥ त्रीनय
 नाचेंजीवन॥ त्रीभुवनपतिरघुनरन॥ पुढेतेभुनचास्त्रीबा॥ ४॥ तेंगोलभी
 तीर्णवन॥ पांचाळेश्वररम्यस्त्रान॥ तेथेभुमीत्तुनगायन॥ रामचंद्रेंकीलें॥
 ५॥ ६॥ रघुतमाश्रिसांगतीतापाश्रि॥ तेथेभद्रकीणमाहाकृष्णपरमलभीयाएते
 जोराश्रि॥ जैसोआकाश्रिंभास्कर॥ ७॥ सयकरावयातपातें॥ पंचअस्पराअस्परना
 थें॥ पाटवीतांकृष्णियातें॥ देखेवानियांभाष्टन॥ ८॥ भुगभीवीवरकहन॥ यांचेसर्वदां
 ईकेगायन॥ याकरीतांउवीप्रिधुन॥ श्वनिउठलिराघवा॥ ९॥ असोहाषियोहेश्वानि
 श्रीरामजात्वाकवलेंगनी॥ मगवीवरतेउष्टुनी॥ बाहीरजात्वाभेटावया॥ १०॥ रामवं
 दीकृष्णीचरण॥ आदरेंभेटलेदोघेजण॥ मगजाअमातेतेउन॥ मीत्रकुव्युष्मपुजो

"The Raibamide Sanskrit Mandal, Dhule and the Raibamide Chavhan Prakriti
 "Santoshin Nalapat"

आ१३॥

त्वा ॥२८॥ तेथेंहमुनयेकरात्र ॥ माघारावालीवासदनारीमित्र ॥ नवमेघरंगरघुवीर
सुतीक्षणजाश्रमपावला ॥२९॥ मगअगस्तीचेंदर्शन ॥ व्यावयाउद्दीनरघुनंदन ॥ तोंप्रा
हांश्रविसुलीक्षणम्प्रुतषार्थसांगेजगस्ति चा ॥३०॥ आत्तापिवात्तापिईत्तवल ॥ ती
धेद्देयपरमसबल ॥ श्रीववरदेत्तेमातारेवश्च ॥ कापव्यसकवजाहाती ॥३१॥ अन्ने
रपहोययेक ॥ दुजानीजांगें होयउहकगयेकअन्नदातादेख ॥ होउनबेसेवनांत
री ॥३२॥ आत्तापीअन्नदात्तापुर्ण ॥ ताथुनआणिब्राह्मणम्प्रुजाकरोनीउदक
अन्न ॥ उदारोश्चसमपिति ॥३३॥ मगआत्तापिबाहेनावधेउन ॥ वात्तापिईत्तवल
दोषेजण ॥ मगबीप्रांचीपोटेकाडुन ॥ यताध्यावोनबाहेरी ॥३४॥ देसेअसंस्क्यात
हीजगण ॥ भक्षीलेतीहीमानने ॥ मगकलशोङ्गवाश्रीदारण ॥ सकवब्रात्त्वणगेलेये ॥३५
मगतोभाहाराजघटोङ्गव ॥ जाश्रीत्रारणस्वर्गीचेदेव ॥ अदृषिकैवारेंकरणीर्णव ॥
देयस्वानापावला ॥३६॥ तंवत्तोधरीअगस्तीवरण ॥ गणेजाश्रमकराजीपाव

वन॥अन्नजथवाक्लेंग्रेउन॥दीत्तक्जीवनप्राप्तीजे॥४७॥मुख्योद्दीसेंवेदाध्य
 यन॥योटेंश्रीसदाधनुष्यबाला॥तंवज्ञातापीज्ञाल्पण॥कापन्यवेचिंपातला॥४८
 शुधधोत्रयझोपवीत॥टीक्केकुरामाक्षाप्रीरवत्॥धोत्रवोलींसरसावीत॥क्षमा
 बहुतधरीलीसे॥४९॥तटिकाचदावीज्ञाचार॥परीजंतरींदुराचार॥अंतरींक
 ऊवरीसुंदर॥वंदावनफब्जैसे॥५०॥कींवरपंगेजारीण॥दावीभृताराप्रीझे
 वाकरन॥कीषट्टकुक्काचेंलक्षण॥उत्तरभीवचनगोउजैसे॥५१॥बचनागमुखी
 घावितां॥प्रथम्भगोउवाटतत्त्वत्ता॥किंरंवच्चोरगांवीअसत्तां॥बहुतश्रेहउद्दी
 ॥५२॥कींविषकुमभरत्तासमस्ता॥वरीजसृतघातलेंकींचीता॥कीदाभीकाप्रीष्य
 दावितभगुरुरोवावरीवरि॥५३॥कुम्भिष्याचाज्ञारकरंग॥आरंभीदावितसुरं
 ग॥कींनटेधरीलेंसोंग॥वीरक्ताचेव्यर्थीयैं॥५४॥त्तेसाज्ञापीमावकर॥ऋषीस
 दावीतबहुतज्ञादर॥वरीत्राब्दरसावफार॥जांतकातरहुरात्मा॥५५॥असोज्ञातो

"The Ramadeo Saderi Mandir, Dhule and the Krishnadeo Chhatra Mandir, Nanded, Maharashtra, India"

॥३॥

पीकापत्यवेशिं ॥ जाश्रमानेतअगस्ति॒शी ॥ वाला॒ पिफके॑ वेगो॑ शिं ॥ होउनियां॑ बैसला॑
॥४८॥ अगस्ति॑ नैंभृषी॑ क्षिं पवे॑ ॥ उदकना॑ हीं जो॑ व्राशी॑ ले॑ ॥ तो॑ कापत्य॑ अवधे॑ समजले॑
कायके॑ ले॑ कलक्रो॑ झवे॑ ॥४७॥ उदरा॑ वरनकारती॑ बाह॒ स्त ॥ दैत्य॑ भस्मके॑ लापो॑ टां ता॑ ॥
दोये॑ नामये॑ उनबाहा॑ त ॥ बाहि॑ रत्नरीतये॑ आता॑ ॥४८॥ तवंतो॑ नैदि॑ प्रत्योतरा॑ ॥ दोये॑ र
पथरीती॑ घोर ॥ माहांवी॑ क्राळभयंकरा॑ ॥ अवले॑ सत्वरकूषि॑ वरी ॥४९॥ धनुष्यासच
ठउनगुण ॥ अगस्ति॑ नैं सो॑ डिलाबाण ॥ वाला॑ पीरंशी॑ रछे॑ दुन ॥ नैलें॑ उडुनआकाशा॑
॥५०॥ दोये॑ नीमाले॑ देखोन ॥ ईलवल्लप॑ लाला॑ तैथुन ॥ तवतो॑ कलक्रो॑ झवको॑ धायमा॑
न ॥ पाटी॑ लागलातयाचा॑ ॥५१॥ पवत्तो॑ सरल्लिअवधी॑ जगत्ती॑ ॥ परीपादि॑ न सो॑ डि॑
अगस्ति॑ ॥ तवतो॑ उदकहोउनकापत्यगत्ती॑ ॥ समुझोदकिं॑ मी॑ सलला॑ ॥५२॥ को॑ धाय
मानतो॑ रघे॑ श्वर ॥ लालकाक्षपसरोनिदोन्ही॑ करा॑ ॥ जाच्छनकरुनसागरा॑ ॥ उदरा॑ माजीजी॑
रवीला॑ ॥५३॥ ल्लणो॑ नउदारारघुपत्ती॑ ॥ ऐसापुरावौर्थी॑ अगस्ति॑ ॥ याचि॑ भेदये॑ उनैि

श्रीनी॥ श्रीतापतीजायपुदें॥ ५४॥ मगसुत्तीक्ष्णाचीआज्ञा॥ घेउनीयांरामराणा॥
 चालिलैजातोकर्दीवना॥ अगस्ति चैअश्रमारी॥ ५५॥ तोंमार्गिजिगस्तीचावंधु
 माहाप्रतिनमित्तपसीधु॥ या चैजाश्रमीजानंदकंदु॥ श्रीतावध्यभराहिला॥ ५६॥
 तेथेंक्षेपोनयेकदीन॥ पुटेजातरवीकर्मुषण॥ तोंदैरविलेंअगास्तिचैवना॥ श्रीभा
 यप्रानसदांफलें॥ ५७॥ द्वायायाग्रीतक्षसवन॥ माजीनदिसेसुर्यकीर्ण॥ नारकीपे
 कालिरातांजन॥ गेलेभेदुनगगमाते॥ अश्राकवक्षउतोलीया॥ रायजांबालि
 खिरणीया॥ निबवटपीपक्षवाढोनिया॥ सदरडाहाल्याशोभती॥ ५९॥ डाकिंबी
 श्रीवरीरायमंदार॥ चंदनमोहावक्षअजार॥ चेपकजाईजुईपरीकर॥ बकुवमोगरे
 शोभती॥ ६०॥ श्रींवत्तीचंपकवक्षपरीकर॥ तुल्बाश्रीबील्वदेवदार॥ कनकवेलीनाग
 वेल्लिसुंदर॥ पोवकेवेलीजारक्त॥ ६१॥ कल्पवक्षअआणीकांचन॥ गदउवक्षउर्जुन
 वालयाचीबेटेसुवसेंपुर्ण॥ कर्पुरकर्दीओल्लती॥ ६२॥ श्रावाल्लमालपारीउल्लाला॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com